# ज्ञान की मींमासा

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

ज्ञान का उपयोग मानव जीवन में सबसे अधिक हैं। ज्ञान क्या है? कैसे प्राप्त होता है? ज्ञान के साधन क्या हैं? इन सबका विवेचन ज्ञान मींमासा में किया जाता है। सांसारिक वस्तुओं का ज्ञान ज्ञेय कहलाता है। किन्तु यह ग्रहणीय है या नहीं, यह ज्ञान बताता है। जो ग्रहण करने योग्य है वह ग्राह्य है, जो छोड़ने योग्य है वह हेय है। चौरासी लाख योवनियों में सभी प्राणियों की आत्मा एक जैसी है। आत्मा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। अलग–अलग शरीर में होने के कारण आत्मा प्रस्फुटित नहीं हुई है। अंतर केवल यही है कि अपने कर्म के अनुसार सभी आत्माओं में भेद दिखलाई देता है। आत्मा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। शरीर के स्तर पर ही यह भेद दिखलाई पड़ता है। बाह्य जगत बहुत विशाल है। बाह्य जगत का ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा होता है। विषयों का सम्बन्ध इन्द्रियों से है। इन्द्रिया पांच हैं सभी इन्द्रियां अपने–अपने विषयों का ज्ञान प्राप्त करके मन तक पहुंचाती है। मन सम्बन्ध का सम्बन्ध सभी इन्द्रियों के साथ होता है। आगमों में कहा गया है कि जो एक को जानता है वह सबको जानता है और जो सबकों को जानता है वह एक को जानता है। वेदान्त दर्शन में कहा गया है कि एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति अर्थात् सत्य एक है उसी सत्य को विद्वान लोग अपने–अपने ढंग से व्याख्यायित करते हैं। आत्म विद्या का ज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान है जो आत्मा को जानता है वह आत्मविद् कहलता है। उसके लिए कोई वस्तु ऐसी नहीं है जिसे न जाना जा सके। ज्ञान के द्वारा ही सबको जाना जाता है और आचार के द्वारा उस ज्ञान को जीवन में उतारा जाता है।

भारतवर्ष आचार प्रधान देश है। यहां आचार की महत्ता प्राचीन काल से ही मान्य रही है। आचार सम्पन्न व्यक्ति का ही जीवन परिष्कृत एवं व्यवस्थित होता है। आचार के आधार पर अवलम्बित विचार जीवन का परिष्कारक होता है। जैन परम्परा में आचार विषयक गम्भीर चिन्तन तथा आचार संहिता का विश्लेषण प्रचुर रूप में पाया जाता है। भारत का प्रमुख वैशिष्ट्य आचार शास्त्र है। यहां पर आचार के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

जीवन की मौलिक आवश्यकताओं को पूर्ण करता हुआ मानव यतनापूर्वक कैसे जीवन जीए तथा अतिचारों से कैसे बचे, इनके उपाय बताए गए है। आचार को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि शिष्ट व्यक्तियों द्वारा अनुमोदित एवं बहुमान्य रीतिरिवाजों को आचार कहते हैं। मनुष्य का जो आचरण है, वही आचार है। यह सदाचार का द्योतक है। भारतीय साहित्य में आचार का महत्त्व भलीभांति दर्शाया गया है। आचार शब्द आ+चर्+घञ् के योग से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है आचरण अथवा अनुष्ठान। यहां व्यवहार, चरित्र, चारित्र, वृत्त, शील, आचार–विचार आदि को आचार के अन्तर्गत परिगणित कर लिया गया है। सदाचार का विरोधी कदाचार है। सदाचार यदि अनुष्ठेय है तो दुराचार हेय है। दुराचार मानव के पतन का प्रमुख कारण है। इसलिये यह सर्वतोभावेन त्याज्य है।

सदाचार से मनुष्य प्रेय के साथ–साथ श्रेय को प्राप्त करता है, किन्तु कदाचार से किसी प्रकार प्रेय का लाभ हो भी जाय, तो भी वह अधोगति का मूलकारण होता है। सदाचारी आचार का पालन करते हुये श्रेयस् को प्राप्त करता है, और अन्त में परमगति को प्राप्त करता है–'आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्। भारत प्रारम्भ से ही विभिन्नताओं का देश रहा है; किन्तु यहां की सांस्कृतिक उदात्तता के कारण इनमें एकता का ही स्वर मुखर रहा । यहां की दो परम्पराएं बहुत ही प्राचीन हैं–वैदिक और श्रमण। श्रमण परम्परा का सम्बन्ध बौद्ध और जैन सम्प्रदाय से है। वैदिक, बौद्ध और जैन इन तीनों परम्पराओं की अपनी–अपनी सांस्कृतिक पहचान है। प्रत्येक परम्परा का दार्शनिक और आचार सम्बन्धी दृष्टिकोण भी भिन्न–भिन्न है। एक ही देश में और एक ही स्थान पर उत्पन्न, विकसित और फलीभूत होने के कारण एक दूसरे के तत्त्वों को भी इन धर्मों ने ग्रहण किया। इनमें से कौन प्राचीन है और कौन अर्वाचीन यह विवाद का विषय है। यह प्रश्न विवादास्पद इसलिए बना कि श्रमण परम्परा के समर्थक श्रमण परम्परा को प्राचीन प्रमाणित करते हैं और वैदिक परम्परा के समर्थक वैदिक परम्परा को। डा0 लक्ष्मण शास्त्री ने वैदिक संस्कृति को श्रमण संस्कृति का मूल माना है। उनका अभिमत है–"जैन तथा बौद्ध धर्म भी वैदिक संस्कृति की शाखाएं है। यद्यपि सामान्य मनुष्य इन्हें वैदिक नहीं मानता। सामान्य मनुष्य की इस भ्रान्त धारणा का कारण है कि ये संस्कृतियां वेद विरोधी हैं। सच तो यह है कि जैनों और बौद्धों की तीनों अन्तिम कल्पनाएं कर्म विपाक, संसार

का बन्धन और मोक्ष अन्ततोगत्वा वैदिक ही हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच व्रत आचार के मूलाधार हैं। जैनागमों में आचार विशुद्धि पर बहुत बल दिया गया है। आचार ही साधना का प्राण है। जैनागमों मे आचार के पांच भेद किये गये हैं– 1. दर्शनाचार, 2. ज्ञानाचार 3. चारित्राचार 4. तप आचार 5. वीर्याचार। कहीं–कहीं श्रुतधर्म और चारित्र धर्म के रूप में आचार के दो भेद हैं। कहीं सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र के रूप में तीन भेद हैं। कहीं ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार और तपसाचार के रूप में चार भेद किए गए हैं। ज्ञान मीमांसा सभी दर्शनों का केन्द्रीय सम्प्रत्यय है। यह ज्ञान और आचार की व्याख्या करता है।